राज
कॉमिक्स
संख्या 0140
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
बर्फ की
चिता
Vijay Kadam
सुपरकमांडो
ध्रुव
संस्थापक
श्रद्धांजलि
वर्ष 2021

पर्वतराज हिमालय की बर्फीली वादियां, अपने अंदर न जाने कितने रहस्यों को छुपाए हुए हैं। पहाड़ी गांवों की ठंडी रातों में, अलाव के ईर्द-गिर्द बैठे गांव वाले जब भी इन रहस्यों का जिक्र करते हैं, तो सबसे पहले जिक्र आता है *हिममानव यति* का! और हर किस्से की शुरूआत एक ही वाक्य से होती है, " शक्तिशाली यति को देखने का सिर्फ एक ही नतीजा है; एक *निश्चित मौत !!*
और मरने वाले को मिलती है...
बर्फ की चिता
कथा एवं चित्र
अनुपम सिन्हा
संपादक
मनीष चंद्र गुप्त

चिनार गुल बांध भारतीय इंजीनियरों की कुशलता का सबसे पक्का सबूत है। तेरह हजार फुट की ऊंचाई पर बना यह बांध लगभग पूरे उत्तरी क्षेत्र को बिजली सप्लाई करता है।

अचानक एक दिन बांध का पानी दीवारों के ऊपर से बहने लगा। आस-पास के नगरों में भयंकर बाढ़ आ गई -
सरकार तुरंत हरकत में आ गई -
बाढ़-पीड़ितों को सारी सुविधाएं पहुंचा दी गई हैं, सर!
पर ऐसा हुआ कैसे?
प्रधान मंत्री
कॉन्फ्रेंस रूम
तेरह हज़ार फुट की ऊंचाई पर बाढ़!!
सोचना भी मुश्किल है!
मैदानी इलाकों की हालत भी खराब है, सर! सभी नदियों में पानी खतरे के निशान को पार करने ही वाला है!
जाहिर है! पहाड़ी इलाकों का सारा पानी मैदानी इलाकों की तरफ तो बढ़ेगा ही!
तभी-
सर! मौसम विभाग की एक बहुत ही आश्चर्यजनक रिपोर्ट अभी-अभी आई है!
उनके अनुसार हिमालय की बर्फ का एक बड़ा भाग अचानक पिघल गया है!...
...यह बांध पानी की मात्रा में अचानक बढ़ोत्तरी से टूटा है!
परंतु इतनी बर्फ अचानक पिघली कैसे?
इस बारे में उनको अब तक कुछ भी पता नहीं लग पाया है!
उसी वक्त- स्पेस कंट्रोल सेंटर में -
सर, इनसेट से भेजा गया यह चित्र देखिए! इसमें यह चमक कैसी है?
माई गॉड!
यह तो किसी विस्फोट की चमक लगती है!!
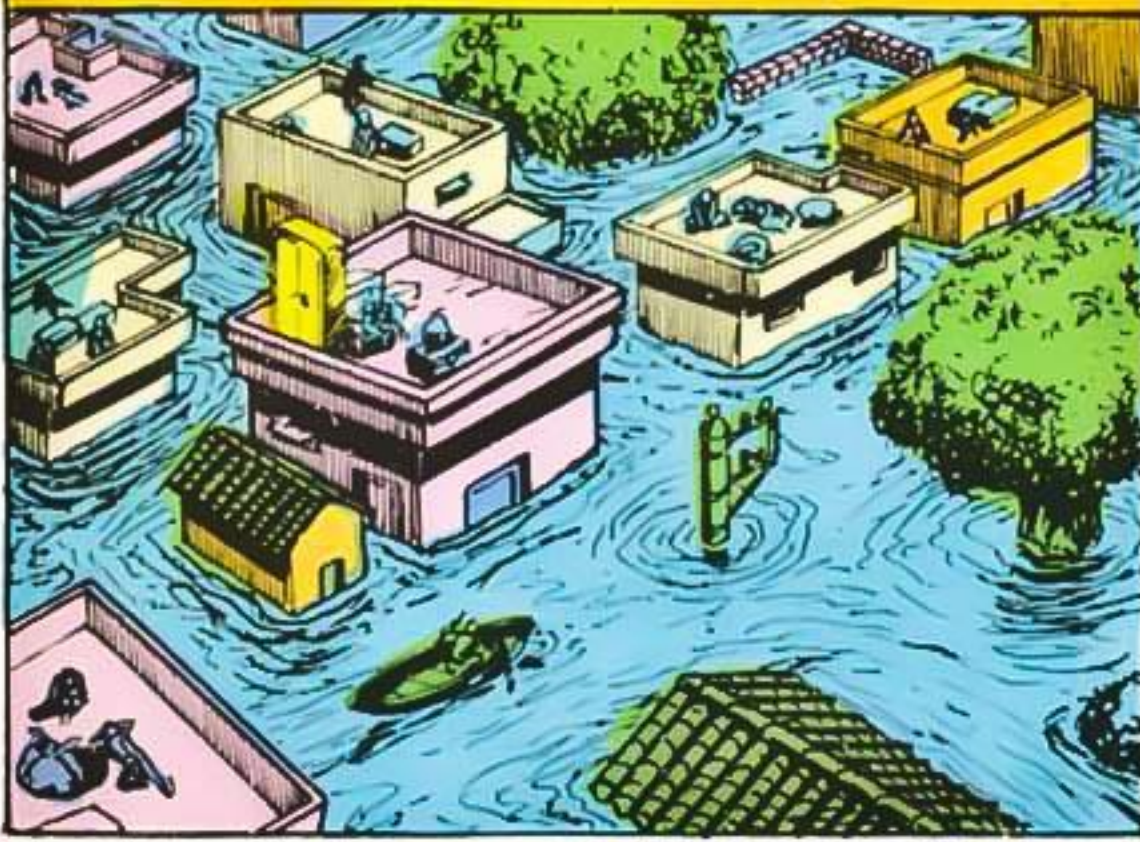
और इस तरह रक्षा मंत्रालय भी इस मामले की चपेट में आ गया-
इसमें इतना परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है! मेरे ख्याल से यह कोई बड़ी उल्का है, जो हिमालय पर आ गिरी है!
रक्षा मंत्रालय के शब्दकोष में ख्याल शब्द होता ही नहीं है!
और अगर ऐसा हुआ होता तो हमारे टेलीस्कोप उल्का को अवश्य देख लेते!
तो अब हम को क्या कदम उठाना चाहिए?
हमारा सबसे पहला काम उस स्थान पर जाकर छानबीन करना है जहां से बर्फ पिघली है; और दूसरा काम...
...कारण पता लगा कर इस विपत्ति को आगे बढ़ने से रोकना है!

इसके लिए तो हमको स्पेशल फोर्स वहां पर तुरंत भेजनी चाहिए...
...जिनको बर्फीले इलाकों में युद्ध की स्पेशल ट्रेनिंग दी गई है! यही न?
हां! एकदम यही!
लेकिन हमारे ऐसे सभी जवान सियाचिन ग्लेशियर पर तैनात हैं! और खराब मौसम के कारण अगले दो दिनों तक वहां हैलीकॉप्टर नहीं जा सकता!
आई नो दैट! लेकिन इस वक्त...
इस वक्त हमको हैलीकॉप्टर से, वहां पर, एक ऐसे व्यक्ति को भेजना पड़ेगा जो शरीर का भी उतना ही शक्तिशाली हो, जितना दिमाग का तेज!
...यानि जो हमारे जवानों के वहां पहुंचने तक परिस्थितियों को काबू में रख सके?
ऐसा शख्स तो मेरी नजर में सिर्फ एक ही है!

सुपर कमांडो ध्रुव!
कमांडो फोर्स का कैप्टेन? इसके बारे में तो मैंने भी सुना है! लेकिन यह कभी किसी फौजी अभियान पर नहीं गया है...
...मुझे शक है कि यह उस लड़के के बूते की बात नहीं होगी!

उस लड़के की गारंटी मैं लेता हूं, सर!
मैं तुम्हारे फैसले की कद्र करता हूं, कमांडर! अगर तुम समझते हो कि ध्रुव इस काम के लिए सबसे उपयुक्त है...
...तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है!

और फिर - आई॰ जी॰ राजन के घर में–
...तुमको अपने साथ कुछ भी ले जाने की आवश्यकता नहीं है, ध्रुव! हम तुमको इस स्थान के आस-पास कहीं उतारेंगे!

यहां से उत्तर-पूर्व दिशा में हमारी सेना का एक गुप्त आपातकालीन डिपो है! हम तुमको ट्रांसमीटर पर निर्देश देकर, वहां तक पहुंचा देंगे!

इस आपातकालीन डिपो में तुमको अपनी जरूरत की हर चीज मिल जाएगी! हथियार, गोलियां, दवाएं, डिब्बाबंद खाद्य सामग्री वगैरा! ये सब कुछ वहां पर होगा!
ठीक है, सर! तो मैं हिमालय की कड़कड़ाती ठंड का सामना करने के लिए कुछ गर्म कपड़े ले लूं! फिर मैं...

गर्म कपड़े बीसवीं सदी की चीजें हैं, भइया! तुम इक्कीसवीं सदी के अत्याधुनिक साधनों से ठंड का सामना करो!
श्वेता! तू यहां क्या कर रही है?
तुम लोगों की बातें सुन रही थी!

यह देखो, भइया! मेरा लेटेस्ट आविष्कार! इस यंत्र को तुम अपनी बेल्ट पर चिपका लेना! यह तुम्हारे बदन से लगी हवा की परत को, हमेशा बदन के तापमान पर रखेगा!...
...और तुमको हिमालय की बर्फ पर ऐसा लगेगा, मानो बगीचे में घास पर घूम रहे हो!

सर, इलेक्ट्रॉनिक्स के मामले में मेरी बहन एकदम जीनियस है!
वह तो मैं खुद ही देख रहा हूं! नाऊ, आर यू रेडी?
एकदम, सर!
तो आओ! एक-एक सैकेंड कीमती है!

और सिर्फ पैंतालिस मिनट बाद –
कमांडर वर्मा ने तुम पर जितना भरोसा दिखाया है, उतना तो आज तक किसी फौजी पर भी नहीं दिखाया, ध्रुव!
ऐसा क्या जादू कर दिया तुमने उनपर?
कुछ खास नहीं! लगभग दो महीने पहले छः गुंडों के एक खतरनाक गैंग ने उनकी बेटी का अपहरण कर लिया था।
तब मैंने उस को उन गुंडों के चंगुल से छुड़ाया था!
आज उन्होंने जिस भरोसे से मुझे इस अभियान पर भेजा है, मैं उस भरोसे को कभी ठेस नहीं लगने दूंगा!...
और न ही किसी भी ताक़त को अपने देश का एक भी तिनका नष्ट करने दूंगा!
हमारे सेंसरों के मुताबिक विस्फोट वाला स्थान इसी दस कि॰मी॰ के घेरे में कहीं मौजूद है!
मेरा ख्याल है कि तुमको मैं यहीं उतार दूं!
हमारी फ़ौजें यहां पर दो दिनों के अंदर-अंदर पहुंच जाएंगी!
तब तक के लिए बेस्ट ऑफ लक, ध्रुव!
थैंक्यू, कैप्टेन!
और इस तरह शुरू हुआ ध्रुव की किस्मत का वह सफर, जिसकी आखिरी मंजिल थी– एक ठंडी मौत!
विस्फोट वाला स्थान ढूंढ़ना ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए! अगर मैं इस पिघले पानी के साथ-साथ ऊपर की तरफ बढ़ूं...
..तो जल्दी ही उस स्थान तक पहुंच जाऊंगा!
ध्रुव की तेजी से ऊपर की तरफ बढ़ती आकृति क्रमशः दूर होती गई –
और बर्फ से ढकी जमीन पर रह गए- सिर्फ एक जोड़ी पैरों के निशान।

ध्रुव ने एक शक्तिशाली ट्रांसमीटर बाहर निकाला।

हैलो! हैलो!! X70NP हियर! आप मुझे सुन रहे हैं? ओवर!
यस! X70NS हियर! हम सुन रहे हैं, ध्रुव! बोलो! ओवर!

सर, यह पानी एक विशाल चट्टान के नीचे से आ रहा... आऊ!! पानी बहुत गर्म है, सर!
गर्म है?
शायद यहां कोई सोया हुआ ज्वालामुखी है? जो अब फटने जा...

ध्रुव अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि-
कड़ाक
कर्रर... पिटटटट... टुईssss... कड़ड़ड़ड़

यह तो... यह तो... याति लग रहा है। हिमालय की दंत-कथाओं का रहस्यमय हिममानव!
आश्चर्यचकित ध्रुव क्षण भर के लिए पलकें तक झपकाना भूल गया-

और यही क्षण उसके लिए घातक सिद्ध हुआ-
ठाक
आह! यह मुझपर हमला क्यों कर रहा है?

शायद यह मुझे अपना दुश्मन समझ रहा है!..
पर क्यों?
धाड़

कहीं ऐसा तो नहीं कि यह ही किसी तरह से बर्फ को पिघला रहा है?
भा
ड़.

अगर ऐसा है तो मुझे इसको किसी तरह से रोकना पड़ेगा!
अगले ही पल ध्रुव तेजी से एक तरफ भागा।

और जब तक जमीन पर गिरा यति उठकर ध्रुव के पीछे भागता-
ध्रुव उसकी आंखों से ओझल हो चुका था।

लेकिन नर्म बर्फ से ढकी सतह पर भागते पैरों के निशान पहले की ही तरह मौजूद थे-

उसका पीछा करना ज्यादा कठिन नहीं था।

लेकिन ध्रुव को पकड़ पाना-

...बहुत मुश्किल काम था।
रस्सी खिंची- और यति एक बार फिर नीचे आ गिरा।

इस बार यति उठ नहीं पाया। रस्सी का दूसरा छोर लेकर ध्रुव बिजली की तेजी से लपका-

और यति मजबूत रस्सी के कुंडलों में कैद हो गया।

लेकिन- सिर्फ क्षण भर के लिए!
...ईयाााा

और इस बार होनी टल नहीं सकी-

यति के हाथ घूमे- और ध्रुव का शरीर हजारों फीट गहरी खाई में नीचे की ओर गिरने लगा-

लेकिन रस्सी का एक टुकड़ा अभी तक ध्रुव के हाथ में ही था-
यह उभरी हुई चट्टान! अब यही मेरी एकमात्र आशा है!

इतना सहारा ध्रुव के लिए काफी था—
वाह, भगवान! आज तो तूने ही बचाया!

कांपते कदमों से ध्रुव इंच-इंच करके ऊपर चढ़ने लगा—

लेकिन इस बार उस की नजर जिस दृश्य पर पड़ी—
?

उसके लिए वह कतई तैयार नहीं था—
यह क्या है?
ये दोनों अचानक कहां से आ गए?

ऐसी कोई चीज़ तो मैंने इस धरती पर कभी नहीं देखी! फोटो तक में नहीं!
लेकिन ये दोनों अजीबोगरीब प्राणी यति को घेर रहे हैं! और इन के इरादे भी नेक नहीं लग रहे हैं!
यानि इस वक्त मेरा पहला कर्तव्य है!...
इस दुर्लभ जाति के प्राणी यति को बचाना!

और यति जब तक उन प्राणियों को देख पाता—
?
तब तक वह घिर चुका था।

भागने या बचने के रास्ते बंद हो चुके थे—
धाड़
लेकिन यति बिना लड़े हार मानने वाला नहीं था।

उन दोनों प्राणियों के लिए यति एक शक्तिशाली पशु से ज्यादा कुछ नहीं था।

उनके हाथ के पिस्तौल-नुमा हथियार से आग की एक लपट निकली।

और आसपास का पूरा वातावरण आश्चर्य-जनक रूप से गर्म हो गया।
यति गर्मी सहने का बिल्कुल आदी नहीं था।

अब यति बेबस था। दोनों प्राणी यति की तरफ बढ़े–
यही मौका है!
और ध्रुव उन दोनों की तरफ!

दोनों प्राणी ध्रुव की मौजूदगी से अंजान थे। और ध्रुव ने इसका पूरा फायदा उठाया–
ठाक
आऽऽ!

चीख सुनकर दूसरा प्राणी ध्रुव की तरफ पलटा–
उसका हथियार ध्रुव की ओर तना–

लेकिन ध्रुव ज्यादा तेज था–

ध्रुव ने उनको संभलने का मौका नहीं दिया–

वे प्राणी इसके लिए तैयार नहीं थे। वे भागे–
पुंआ!
ध्रुव उनके पीछे लपका–

लेकिन तभी एक प्राणी का हाथ घूमा। और ध्रुव का दिमाग अंधेरे में डूबता चला गया—
तड़ाक

पता नहीं कितनी देर बाद - जब ध्रुव की आंखें खुलीं—
?
तो एक और आश्चर्य उसका इंतजार कर रहा था।

तुम कौन हो, बेटे? और अब कैसी तबियत है तुम्हारी?
म...मैं बिल्कुल ठीक हूं। मेरा...मेरा नाम ध्रुव है। पर मैं हूं कहां पर?
तुम दोस्तों के बीच में हो, बेटे! मैं यहां का सरदार हूं! मेरे बेटे जिंगालू को बचाकर तुमने अपने दोस्त होने का पूरा सबूत दे दिया है!
पर आप लोग कौन हैं? और हमारी भाषा कैसे जानते हैं?

हम लोगों को तुम लोग यति कहते हो! हिममानव यति! तुम्हारी भाषा हमने उन ऋषि-संन्यासियों से सीखी है, जो तपस्या करने हिमालय पर आते हैं।
हम लोगों को सभ्यता की सीख तुम्हारे देश से ही मिली है।

यदि ऐसा है तो हमारे देश के प्रति आदर-भाव रखने के बजाय आप लोग उसे नष्ट करने पर क्यों तुले हुए हैं?
और अगर भारतवासियों को आप दोस्त मानते हैं, तो फिर जिंगालू ने मुझ पर हमला क्यों किया?

बस, लड़के! अगर तुम भारतवासी न होते तो अब तक मैं तुम्हारी जुबान के टुकड़े टुकड़े कर के फेंक देता!
जिंगालू ने तुमको पीछे से ट्रांसमीटर पर बोलते सुना, और जासूस समझकर तुम पर हमला कर दिया! समझे?

तो फिर ऐसा क्यों हो रहा है? कौन कर रहा है ये सब?
कौन क्या कर रहा है? कुछ साफ-साफ बोलो तो समझ में भी आए!

ध्रुव ने संक्षेप में पूरी कहानी यतिराज को सुना दी–
तो यह बात है! मुझको इस विषय में अब तक कोई जानकारी नहीं थी!
समस्या तो वाकई गंभीर है!
लेकिन वे अजीबोगरीब प्राणी हैं कौन?
यह तो मुझे भी नहीं पता!

उनको पहली बार शायद तुम दोनों ने ही देखा है!
तो फिर इस विनाश-लीला के पीछे अवश्य उन का ही हाथ है!
उनके, तेज गर्मी पैदा करने वाले हथियार, इस बात का पर्याप्त सबूत हैं कि उनके पास बर्फ को तेजी से पिघलाने की क्षमता है!

अब मेरा पहला काम उन प्राणियों को ढूंढ़ना है! ...
और यह काम मुझको आज और अभी करना है!
बर्फ अभी भी तेजी से पिघल रही है!

रुको! मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं!
नहीं, जिंगालू! मेरे साथ जाने से तुम फिर से खतरे में पड़ सकते हो!

हां, बेटा! ध्रुव ठीक कह रहा है! वे किसी दूसरे ग्रह के प्राणी भी हो सकते हैं! और पहली ही मुलाकात में यह पता चल चुका है कि वे प्राणी हम लोगों की प्रजाति में गहरी दिलचस्पी रखते हैं!

इस वक्त ध्रुव का अकेले जाना ही ठीक है! लेकिन अगर यह शाम तक वापस न आया, तो हम इस की तलाश में अवश्य जाएंगे!
हमारी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं, ध्रुव!

जैसे ही ध्रुव बाहर निकला-
आपने मुझे उसके साथ क्यों नहीं जाने दिया, पिताजी?
देखो, बेटे, हम यति अब तक सिर्फ इसीलिए जिंदा हैं, क्योंकि हम बाहरी दुनिया से छुप कर रहते आए हैं!
अगर अब इन पचड़ों में पड़े, तो दुनिया को हमारा पता लगते देर नहीं लगेगी!
...और फिर हमारा क्या हाल होगा, यह सब तुम खुद ही समझ लो!

यतियों का सरदार होने के नाते यह मेरा फर्ज है कि मैं ऐसा कभी नहीं होने दूं!

दूसरी तरफ - ध्रुव अपनी खोजबीन में व्यस्त था-
मुझे पूरा विश्वास है कि इस सारी समस्या की जड़ यही विशालकाय चट्टान है..
...जिसके नीचे से उबलता पानी आ रहा है!

लेकिन इसको आगे बहने से कैसे रोका जाए? कोई तो रास्ता होना चाहिए ...
हां! एक रास्ता है!!
!

लेकिन उसके लिए मुझे एक चीज ढूंढनी पड़ेगी!

और पांच मिनट बाद जब ध्रुव वापस आया, तो उसके हाथ में एक हथियार था –
यह रही उन प्राणियों की पिस्तौल, जो लड़ाई में एक प्राणी के हाथ से गिर गई थी!...

अब मैं उनके ही हथियार से उनको मात दे दूंगा!
यह जगह हंगामा शुरू करने के लिए सबसे अच्छी है! एक... दो...

तीन!
हथियार का ट्रिगर दबा –
सर्र्र
और चारों तरफ की सर्द हवा पलभर में लू में बदल गई। सतह की बर्फ तेजी से पिघलने लगी।

और बर्फ में जकड़ी चट्टानें अपना आधार खोकर लुढ़कने लगीं –

ध्रुव ने एक ही वार से नीचे बहती उबलती नदी का रास्ता रोक दिया –

पानी उल्टी दिशा में बहने लगा।
पानी वापस अंदर आ रहा है!
स्विच बंद करो!

एक बटन दबा और पानी का बहाव धीरे-धीरे बंद हो गया–

अब तो पानी सिर से ऊपर हो रहा है!
अबे अभी कहां?
अभी तो पानी सिर्फ घुटनों तक ही आया है!

अगर बात समझ में न आए तो चौंच बंद ही रखा करो! मेरा मतलब है कि अब बात हद से बढ़ गई है!
अब इस लड़के को काबू में करना ही पड़ेगा!

ध्रुव, बेखबर, नीचे गिरे पत्थरों को ध्यान से देख रहा था–

और उसके चारों ओर शिकंजा कसता जा रहा था–

उधर - जिंगालू का मन बेचैन था–
...मैंने तो ध्रुव को मार ही डाला था..
..पर फिर भी उसने अपने को खतरे में डालकर मेरी जान बचाई!

और मैं इस वक्त उस की कोई मदद नहीं कर रहा हूं!? धिक्कार है मुझपर!

अगर ध्रुव को कुछ हो गया, तो मैं अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाऊंगा!

अचानक तभी–
यह कौन है? पिताजी ने तो किसी भी यति को शाम के बाद बाहर निकलने को मना किया है!
यह आ भी उधर ही रहा है जिधर ध्रुव गया था!

इसके छुप-छुपाकर जाने के अंदाज से साफ पता चल रहा है कि इसके इरादे नेक नहीं हैं!
इसका पीछा करके देखना पड़ेगा कि यह आखिर जा कहां रहा है?

उधर ध्रुव तीन प्राणियों के बीच में घिरा था। और सबके हाथों में वही खतरनाक हथियार थे। ध्रुव ने पुरानी चाल एकबार फिर आजमानी चाही, लेकिन -

क्लक
इस हथियार की ऊर्जा खत्म हो चुकी है!

इस वक्त ये मेरी हत्या करने में भी नहीं हिचकेंगे! लेकिन...
ताड़

यह भी पक्का है कि ये इस हथियार का प्रयोग अपने ही साथी पर नहीं करेंगे!
?
और इस बीच मैं...

...अपना काम कर लूंगा!
निशाना अचूक था।
दोनों प्राणियों के हथियार भी गहरी खाई में जा गिरे।

अब मुकाबला तीन से एक का था। और ध्रुव की नजर में यह मुकाबला बराबर का था—
अब मैं जो कुछ करूंगा, उसके लिए मुझे किसी हथियार की जरूरत नहीं है!

ये तो गया! लेकिन इतनी देर में इसके दोनों साथी मेरे पास आ पहुंचे हैं!

अच्छा ही हुआ! वरना मुझे चलकर इनके पास जाना पड़ता!
आह
ताड़
धाड़

ये गया नम्बर दो!
धमममममम
गुस्से से भरे ध्रुव के हर वार में बुलडोजर की सी ताकत भरी हुई थी।

अब नम्बर तीन की खबर लूं!
पहले इनको अच्छी तरह से पीटकर अपना गुस्सा निकाल लूं!

उसके बाद इनसे पूछताछ करूंगा!
खेल लगभग खत्म हो चुका था। ध्रुव लगभग जीत चुका था।

कि तभी– उसके सिर पर पीछे से एक कायरतापूर्ण वार हुआ–
और ध्रुव का मस्तिष्क दूसरी बार अंधेरे में डूबता चला गया।

जिंगालू यह सब देख रहा था–
तो मेरा शक सही निकला! हमारे दल का कोई यति इन प्राणियों से मिला हुआ है!
वरना यह कभी हो ही नहीं सकता था कि ये प्राणी हमारी नाक के नीचे रहें और हमको पता तक न चले।
लेकिन अब ये ध्रुव को कहां ले ... वाह!!
चट्टान का एक हिस्सा दरवाजे की तरह खुल रहा है!
यानि यह चट्टान ही इनके छुपने का गुप्त स्थान है! मैं अभी इन सब को ...
नहीं! इस वक्त मुझे ठंडे दिमाग से काम लेना होगा! मुझे मदद जुटानी होगी! लेकिन कैसे? अगर पिताजी के पास जाऊं तो वे फिर कह देंगे कि इससे हमारा कोई मतलब नहीं!
बाद में वे गद्दार यति को चाहे मृत्युदंड दे दें!...
लेकिन तब तक ध्रुव का क्या होगा?
अचानक जिंगालू की आंखें चमक उठीं–
हां! एक जगह से मदद मिल सकती है!
उधर- ध्रुव को जब होश आया–
हा हा! जाग गए, बच्चे! हमारे सेंटर में तुम्हारा स्वागत है!
तुम तो हिंदुस्तानी बोल रहे हो!! कौन हो तुम लोग?
हम तुम्हारे जीवनदाता हैं, लड़के! तुम अब तक हमारी कृपा से ही जीवित हो!
यह तो वक्त ही बताएगा कि कौन किसकी कृपा पर जिंदा है!
लेकिन तुम हो कहां के?
तुम जैसे प्राणी तो मैंने पृथ्वी पर कभी नहीं देखे!

इस वक्त तुम्हारे आसपास वही एटॉमिक जेनरेटर है! और जब तक हमारा जेनरेटर चालू रहेगा, तब तक हम इसकी प्रचंड उष्मा के जरिए, बर्फ को पिघलाकर, तुम्हारे देश को डुबाते रहेंगे!

... हम तुम्हारे देश की अर्थ-व्यवस्था को इतनी बुरी तरह से तहस-नहस कर देंगे, कि तुम्हारा देश बिना किसी प्रतिरोध के हमारा गुलाम बन जाएगा!

यतिराज! तुम!
हां, बेटे! मैं! तुम्हें मुझको देखकर झटका तो जरूर लगा होगा, लेकिन मेरे सामने इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था!

झटका लगा तो, लेकिन हल्का सा! तुम्हारे मुंह से ट्रांसमीटर शब्द सुनकर ही मुझे कुछ शक हुआ था! यह शब्द ऋषि-मुनि नहीं सिखाते!
तुम जैसे गद्दारों के कारण ही हमारा देश सैकड़ों सालों तक गुलाम रहा!...
...तुमने अपने ही देश को बेच दिया!
लेकिन तुमने ऐसा क्यों किया?

पहली बात तो यह है, कि हम भारत की सीमा में रहते जरूर हैं लेकिन इस देश के नागरिक नहीं हैं! इसीलिए मैं गद्दार नहीं हूं!
इधर कुछ सालों से हिमालय पर मनुष्यों का आवागमन इतना बढ़ गया है...
... कि हम यतियों का छिपे रहना असंभव हो गया! यह पक्का हो गया कि आने वाले सालों में कोई न कोई हमें अवश्य ढूंढ निकालेगा!...

..तब मैंने बेहतर यही समझा कि मैं खुद ही यतियों को लेकर किसी देश की शरण में चला जाऊं! और इस क्षेत्र के देशों में जो मुझे ज्यादा ताकतवर लगा मैं उसी देश की शरण में चला गया!
ताकतवर की शरण में जाने से ज्यादा अच्छा दयावान की शरण में जाना होता है, यतिराज!...

...अगर तुम भारत को अपना दोस्त समझते तो तुम्हारे एक-एक यति की खातिर हमारे सौ-सौ जवान हंसते-हंसते कुर्बान हो जाते!
लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है! अब तुम किसी को यह नहीं बता पाओगे कि तुमने क्या देखा!
एक मिनट!..

...अगर ये तुम्हारे दोस्त हैं, यतिराज, तो इन्होंने तुम्हारे बेटे जिंगालू पर हमला क्यों किया ?
हाहा! मैंने भी इनसे पहला सवाल यही किया था!...
...दरअसल मेरे सिवा और कोई यति, मेरे इन दोस्तों के बारे में नहीं जानता है! इनके बारे में मैं यतियों को सही वक्त आने पर ही बताऊंगा!
जिंगालू को दूर से आते देखकर इन लोगों ने समझा कि मैं इनसे मिलने आ रहा हूं! पर पास आकर इनको अपनी भूल का एहसास हुआ! तब तक जिंगालू इन को देख चुका था!
...अब इनके सामने सिर्फ यही रास्ता था कि मेरे आने तक जिंगालू को बंदी बनाकर रखें! ताकि मैं आकर उसको सारा माजरा समझा सकूं!

लेकिन जिंगालू सारा माजरा समझने के लिए खुद ही आ गया था—
मुसीबत में दोस्त ही काम आता है, भरिंगा! इस वक्त मैं तुम्हारे अलावा और किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकता!
फिक्र मत करो, दोस्त! मैं सब कुछ समझ गया हूं! कोई गड़बड़ नहीं होगी!
अंदर—
हन सुक, देखो!
एक और यति!
यह तो जिंगालू है! लगता है इसको कुछ शक हो गया है!
इस बार इस को जाने देना खतरे से खाली नहीं है!

तुम जाकर चुपचाप इस का पीछा करो! देखो कि यह क्या चाहता है! जरूरत पड़ने पर अणु-पिस्तौल का प्रयोग करना!
पर मैं... मैं अकेला ही...
अगर दो लोग साथ गए तो यतिराज को शक हो सकता है!
लेकिन ब...बाहर जाने की क्या जरूरत है? वीडियो-स्क्रीन पर सब कुछ दिख तो रहा है!
लेकिन बर्फ गिरनी शुरू हो गई है, गधे!
जल्दी ही हमारे कैमरों के लेंस बर्फ में ढक जाएंगे! फिर हमें कुछ नहीं दिखाई पड़ेगा!
तू जाता है, डरपोक, या तुझे लात मार कर भेजूं?...

हमारी चाल कामयाब रही, भरिंगा! चट्टान का दरवाजा खुल रहा है!
अब आगे सब तुम्हारे ऊपर है!

क...कहां गया वह जिंगालू का ... मेरा मतलब यतिराज का बच्चा?
वह रहा! लेकिन वह तो चट्टान से दूर जा रहा है!

इस चट्टान पर चढ़ कर देखूं, तो दूर तक दिखाई पड़ेगा!
हन सुक ने एक पैर चट्टान पर रखा..

...और तभी चट्टान खड़ी हो गई!
साथ ही एक पत्थर जैसा हाथ प्राणी के शरीर से आ टकराया –
बेहोश होने से पहले हन सुक चीख भी नहीं पाया!

शाबास, भरिंगा!
लेकिन, जिंगालू, जरा आकर तो देखो कि यह कौन है?

यह तो...! अब मुझे सारा माजरा समझ में आ रहा है! तुम तुरंत जाकर यतियों को यहां बुलाकर लाओ!

तब तक मैं इन दुष्टों से निपटता हूं!

और चट्टान के अंदर–
हमने तुमको अब तक सिर्फ इसीलिए जिंदा रखा है, ताकि तुम अपनी आंखों से अपने प्यारे देश की तबाही देख सको।
कल सुबह तक हमारी फौजें यहां पर पहुंच जाएंगी! और फिर तुम हमसे दया की भीख मांगोगे।
कल सुबह! भारतीय फौजें यहां पर कल शाम से पहले नहीं पहुंच सकती हैं!
यानि इस महत्वपूर्ण युद्ध क्षेत्र पर इन दरिन्दों का अधिकार हो जाएगा!
तुमने हमारी योजना देखी, यतिराज? अब तुमको हमारे दोस्त बनने का इनाम मिलेगा!
हम तुमको एक दूसरी ही दुनिया में पहुंचा देंगे!

मैं भी यही चाहता हूं कि सभी गद्दार दूसरी दुनिया में पहुंच जाएं!
जिंगालू!
बेटे, तुम!

अब मैं तुम्हारा बेटा नहीं रहा, यतिराज! अपने देश को बेचने वाला दलाल मेरा बाप कभी नहीं बन सकता।
तुमने यतियों से हर कदम पर झूठ बोला! तुमने कहा कि कुछ लोग यतियों पर जासूसी कर रहे हैं!
तुमने यतियों को झूठा डर दिखाकर, शाम के बाद निकलने को मना कर दिया!
इसी धोखे में मैंने ध्रुव पर हमला किया!

... ताकि तुम बेखटके अपने नए दोस्तों से मिलने आ सको!
मैंने जो कुछ भी किया, वह सब यतियों की भलाई के लिए ही है!
... और मुझे यह करने से रोकने वाला मौत के घाट उतार दिया जाएगा।

तो तुम भी अपनी मौत के लिए तैयार हो जाओ, यतिराज!
जिंगालू यतिराज की तरफ लपका–

पर इस समय किसी का भी ध्यान उसपर नहीं था –

ये दोनों बंदर तो पूरा एटॉमिक स्टेशन तोड़कर हमारी सारी मेहनत को बर्फ में मिला देंगे!

लेकिन इससे पहले कि उनकी उंगलियां घातक ट्रिगर पर दब पातीं–
आऽऽऽ
धड़ाक

तुम लोग तो यतिराज को सचमुच ही दूसरी दुनिया में पहुंचा रहे थे!

क्या तुम्हारी सरकार अपने दोस्तों को इनाम में सिर्फ मौत ही देती है?

जो मन में आए, बको! सुबह होने ही वाली है! अब हमारी फौजें यहां से कुछ ही दूर होंगी! और उनके आते ही...

तभी एक जोरदार धमाके ने बाकी सारी आवाजें दबा दीं–
धड़ड़ड़ड़
अरे! जेनरेटर चालू हो गया है!
और कंट्रोल पेनल टूट चुका है!

यानि अब हम जेनरेटर को बंद नहीं कर सकते!
जेनरेटर ने पूरी शक्ति से बर्फ को दोबारा पिघलाना शुरू कर दिया।

उबलते पानी की प्रचंड धारा फिर से बह निकली—
शररररररर
पानी का रास्ता रोकने वाले भारी पत्थर भी धारा के सामने टिक नहीं सके—

जेनरेटर की गति, नियंत्रण से बाहर होने के कारण जोर पकड़ रही थी। तेज गति के कारण स्पार्किंग शुरू हो गई थी—
भागो!
जेनरेटर फटने वाला है!

पलक झपकते सभी बाहर निकल आए—

भागो, ध्रुव? तुम रुक क्यों गए?
भाग कर कहां जाएंगे?
इस एटॉमिक स्टेशन के धमाके से कई किलोमीटर का इलाका तबाह हो जाएगा!

हम कुछ मिनटों में इतनी दूर नहीं भाग सकते!
अब तो मरना है ही!
लेकिन... मरने से पहले मैं तुमसे... तुम से माफी मांगना चाहता हूं, ध्रुव!

मैं तुम्हारा और तुम्हारे देश का दुश्मन बन गया था! लेकिन अगर तुमने अपनी जान की बाजी न लगाई होती, तो हम दोनों अब इस धरती पर न होते!
तुमने मेरी आंखें खोल दीं, बेटे!

कोई बुजुर्ग मुझसे माफी मांगे, यह मेरे लिए शर्म की बात है! पर अगर मेरे ऐसा करने से आपको शांति मिलेगी, तो मैं फिर से आपको अपना दोस्त कहता हूं!

धन्यवाद बेटे! अब मुझे मौत का कोई डर नहीं है!
मौत से तो मैं भी कभी नहीं डरा!
पर इस धमाके से जो बर्फ पिघलेगी, वह पानी पूरे उत्तरी क्षेत्र में विनाश की लहर...

अचानक-ध्रुव की आंखें तेज गति से बहते पानी को देखकर चमक उठीं-
जिंगारू! जल्दी बताओ! तुम इतने तेज बहते पानी में तैर सकते हो?

मेरे पिता ने अपनी भूल मान ली है! इस वक्त अगर तुम कहो तो मैं इस नदी का रुख भी मोड़ सकता हूं!
इसकी जरूरत नहीं है!

वक्त बहुत कम है! यतिराज, आप मेरा एक हाथ पकड़िए, और जिंगारू, तुम मेरा दूसरा हाथ पकड़ो!

हम दो मिनट में चार किलोमीटर की दूरी तय करेंगे!
तीन आकृतियां तेजी से बहते पानी की तरफ गिरीं।

और फिर पलक झपकते ही तीनों नजरों से गुम हो गए –

दूसरी तरफ – दुश्मन देश की सेना अपने मुकाम पर पहुंच चुकी थी –

कामरेड, ये दोनों हमारी तरफ भागते क्यों आ रहे हैं?
और ये चिल्ला क्या रहे हैं?

भागो! जेनरेटर फटने वाला है! भागो!

इन शब्दों ने दुश्मन सेना पर जादू का सा असर किया। भयभीत सैनिकों के कदम भागने के लिए उठे –
भागो
भागो

लेकिन पाप का घड़ा फूट चुका था। पलभर में हिमालय की छाती पर लाशें ही लाशें बिछ गईं –

कुछ भी नहीं होगा, यतिराज! आपके बारे में जानने वाले सभी व्यक्ति मारे जा चुके हैं, सिवाय मेरे। दुश्मन देश के गिने-चुने व्यक्ति ही आपके विषय में जानते होंगे।...
...उनसे बचने के लिए मेरा सुझाव है कि आप अपना रहने का स्थान बदल दें!

बाकी रहा मैं; तो यह मेरा वादा है कि मैं किसी को भी आप लोगों के बारे में नहीं बताऊंगा! आप लोग वैसे ही रहेंगे जैसे पहले रहा करते थे!

धन्यवाद, ध्रुव! तुमको जब भी हमारी जरूरत हो, तो हिमालय पर हमको कहीं से भी बुला लेना!

हम कहीं पर भी हों, तुम्हारी आवाज हम जरूर सुन लेंगे!
ध्रुव अपनी जगह पर चुपचाप खड़ा दूर जाती दो आकृतियों को देखता रहा।

फिर बाद में-
तुमने तो वास्तव में कमाल कर दिया, ध्रुव! एक ही झटके में दुश्मनों के होश ठिकाने लग गए!
लेकिन, सच पूछो, तो मुझे यकीन नहीं आ रहा है कि यह काम तुमने अकेले किया है!

तुम स्टेशन तबाह करने के बाद, वहां से उफनती नदी में कूद-कर, जिंदा कैसे बच निकले? कोई आदमी पहाड़ी नदी में कूदकर जिंदा नहीं बच सकता!

सिर्फ इतना समझ लीजिए, सर, कि जब भी कोई राम बन कर दुष्टों के विनाश के लिए निकलता है, तो उसकी मदद के लिए कहीं न कहीं से हनुमान आ ही जाते हैं!

समाप्त